ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, July-December 2026, Submitted in July 2026

1868–69 और 1899–1900 के अकालों का बीकानेर राज्य के पर्यावरण एवं समाज पर प्रभाव

Surender Kumar, PhD Scholar (History), Maharaja Ganga Singh University Bikaner, skgodara3@gmail.com
Dr. Vikram Singh Deol, Associate Professor, Department of History, Dr. B.R. Ambedkar Govt. College, Sri Ganganagar

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी में बीकानेर राज्य अनेक प्राकृतिक और पर्यावरणीय संकटों से प्रभावित रहा। इनमें 1868–69 का अकाल तथा 1899–1900 का छप्पनिया अकाल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन अकालों ने केवल कृषि और पशुपालन को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन, जनसंख्या संरचना, सामाजिक संबंधों तथा आर्थिक गतिविधियों पर भी गहरा प्रभाव डाला। प्रस्तुत शोध–पत्र में इन दोनों अकालों के कारणों, पर्यावरणीय प्रभावों, सामाजिक परिणामों तथा राज्य द्वारा अपनाए गए राहत उपायों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: बीकानेर राज्य, अकाल, छप्पनिया अकाल, पर्यावरणीय इतिहास, मरुस्थलीय पारिस्थितिकी, सामाजिक प्रभाव।

प्रस्तावना

राजस्थान का उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र सदैव से अल्प वर्षा और मरुस्थलीय परिस्थितियों के लिए जाना जाता रहा है। बीकानेर राज्य का अधिकांश भू–भाग थार मरुस्थल में स्थित था, जहाँ कृषि पूर्णतः वर्षा पर निर्भर थी। वर्षा की अनिश्चितता तथा प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता के कारण अकाल यहाँ की एक स्थायी समस्या थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में दो बड़े अकालकृ1868दृ69 तथा 1899दृ1900कृने बीकानेर राज्य को गहराई से प्रभावित किया। इन अकालों ने प्राकृतिक संसाधनों, वनस्पति, पशुधन, कृषि उत्पादन तथा मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला।

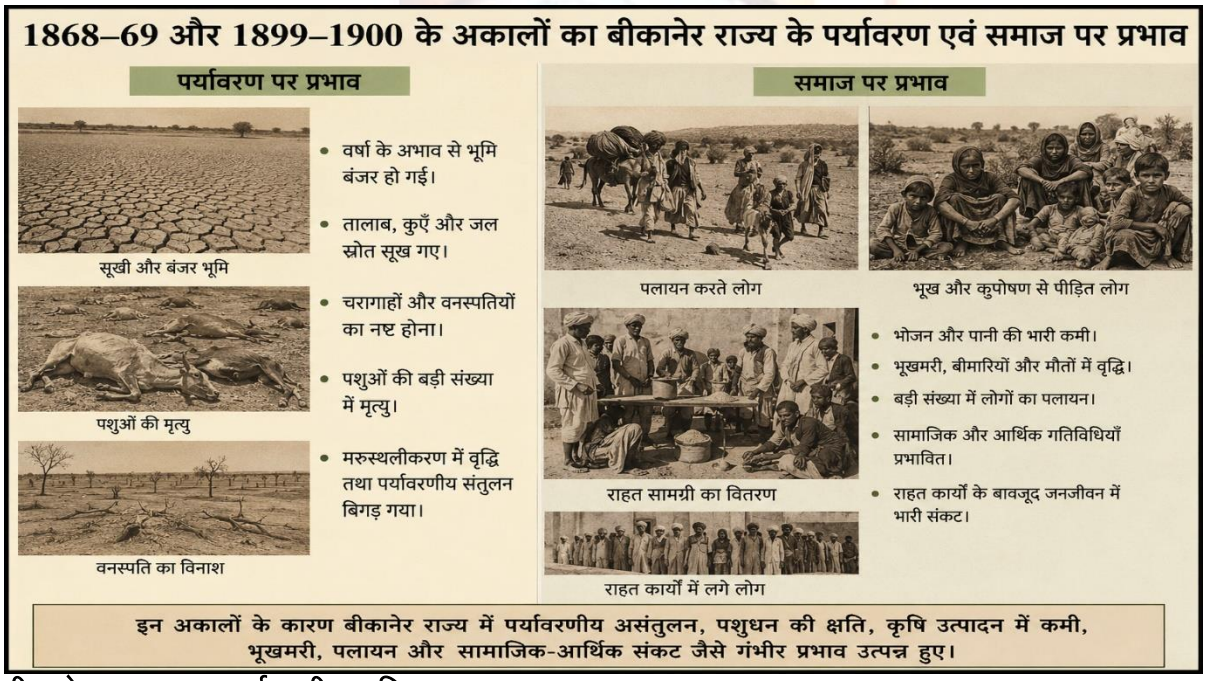

बीकानेर राज्य का पर्यावरणीय परिदृश्य

बीकानेर राज्य का प्राकृतिक वातावरण शुष्क एवं अर्ध–शुष्क था। यहाँ—
औसत वर्षा अत्यंत कम थी।
स्थायी नदियों का अभाव था।
रेतीले टीलों का व्यापक विस्तार था।
कृषि वर्षा पर निर्भर थी।
पशुपालन प्रमुख आर्थिक गतिविधि थी।
ऐसी परिस्थितियों में वर्षा की विफलता सीधे अकाल का कारण बनती थी।

1868–69 का अकाल: कारण और स्वरूप

1868–69 का अकाल राजस्थान के इतिहास के भीषण अकालों में से एक था। इस अकाल का प्रमुख कारण लगातार दो वर्षों तक मानसून की असफलता थी।

प्रमुख कारण

- वर्षा का अभाव
- चारे की कमी
- कृषि उत्पादन का नष्ट होना
- परिवहन सुविधाओं का अभाव
- जल स्रोतों का सूखना

बीकानेर राज्य में इस अकाल के दौरान बड़ी संख्या में पशुधन नष्ट हुआ तथा लोगों को भोजन और पानी के लिए संघर्ष करना पड़ा।

1899–1900 का छप्पनिया अकाल

1899–1900 का अकाल राजस्थान के इतिहास में **"छप्पनिया अकाल"** के नाम से प्रसिद्ध है। विक्रम संवत् 1956 के कारण इसे छप्पनिया कहा गया।

यह अकाल उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे विनाशकारी पर्यावरणीय संकट माना जाता है।

अकाल के कारण

- मानसून की पूर्ण विफलता
- चारागाहों का विनाश
- अत्यधिक तापमान
- खाद्यान्न संकट
- जल स्रोतों का समाप्त होना

अनेक स्थानों पर वर्षा न होने के कारण फसलें पूरी तरह नष्ट हो गईं।

अकालों का पर्यावरणीय प्रभाव

1. वनस्पति का विनाश

- अकाल के दौरान प्राकृतिक वनस्पति पर भारी दबाव पड़ा।
- ईंधन और पशु चारे के लिए वृक्षों का उपयोग बढ़ा।
- खेजड़ी, फोग और अन्य पौधों की अत्यधिक कटाई हुई।
- कई क्षेत्रों में वनस्पति आवरण कम हो गया।

2. **मरुस्थलीकरण में वृद्धि**

वनस्पति के नष्ट होने से—

- रेत के टीलों का विस्तार हुआ।
- कृषि योग्य भूमि प्रभावित हुई।
- भूमि का कटाव बढ़ा।

3. जल संसाधनों पर प्रभाव

- कुएँ, तालाब और जोहड़ सूखने लगे।

परिणामस्वरूप:

- भूजल स्तर में गिरावट आई।
- अनेक बस्तियों का अस्तित्व संकट में पड़ गया।
- पेयजल संकट उत्पन्न हुआ।

4. जैव विविधता का ह्रास

अकाल के कारण:

- जंगली जीवों की संख्या घटी।
- पक्षियों के आवास नष्ट हुए।
- पारिस्थितिक तंत्र असंतुलित हुआ।

कृषि पर प्रभाव

बीकानेर की कृषि मुख्यतः बाजरा, ज्वार, मोठ और मूंग जैसी फसलों पर आधारित थी।

अकाल के दौरान:

- फसलें नष्ट हो गईं।
- बीजों का भंडार समाप्त हो गया।
- कृषि उत्पादन लगभग शून्य हो गया।
- किसानों पर ऋण का बोझ बढ़ा।

कृषि संकट ने राज्य की राजस्व व्यवस्था को भी प्रभावित किया।

पशुपालन पर प्रभाव

बीकानेर राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुपालन का विशेष महत्व था।

अकाल के दौरान

- चारे की भारी कमी हुई।
- लाखों पशु भूख और प्यास से मर गए।
- ऊँट, भेड़ और बकरियों की संख्या में कमी आई।
- पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था कमजोर हुई।

पशुधन की क्षति का प्रभाव कई वर्षों तक बना रहा।

सामाजिक प्रभाव

1. जनसंख्या में कमी

भुखमरी और बीमारियों के कारण अनेक लोगों की मृत्यु हुई।

2. पलायन

लोग जीविका की तलाश में—

- पंजाब
- हरियाणा
- सिंध
- जोधपुर और जयपुर

की ओर पलायन करने लगे।

3. सामाजिक संरचना में परिवर्तन

अकाल के कारण–

- पारंपरिक सामुदायिक संबंध प्रभावित हुए।
- निर्धन वर्ग अधिक प्रभावित हुआ।
- सामाजिक असमानताएँ बढ़ीं।

4. स्वास्थ्य संकट

- भुखमरी के साथ–साथ महामारी भी फैली।
- हैजा
- पेचिश
- बुखार

जैसी बीमारियों ने जनहानि को बढ़ाया।

आर्थिक प्रभाव

अकाल ने बीकानेर राज्य की अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

- प्रमुख परिणाम
- कृषि उत्पादन में गिरावट
- पशुधन की हानि
- व्यापारिक गतिविधियों में कमी
- राजस्व में गिरावट
- ऋणग्रस्तता में वृद्धि

राज्य की वित्तीय स्थिति कमजोर हो गई।

राज्य की राहत नीतियाँ

अकाल की गंभीरता को देखते हुए बीकानेर राज्य ने विभिन्न राहत कार्य प्रारंभ किए।

- प्रमुख उपाय
- राहत कार्यों का आयोजन
- अनाज वितरण
- सार्वजनिक निर्माण कार्य
- जल स्रोतों का निर्माण
- करों में आंशिक राहत

हालाँकि संसाधनों की कमी के कारण ये उपाय पर्याप्त नहीं थे।

अकाल और पर्यावरणीय अनुकूलन

इन संकटों के बाद स्थानीय समाज ने अनेक अनुकूलन रणनीतियाँ अपनाईं।

- प्रमुख उपाय
- टांकों और कुण्डों का निर्माण
- जल संचयन पर बल
- सूखा–रोधी फसलों का प्रयोग
- पशुपालन आधारित जीवन शैली का विस्तार
- सामुदायिक चरागाहों का संरक्षण

इन उपायों ने भविष्य के संकटों से निपटने की क्षमता विकसित की।

ऐतिहासिक महत्व

1868–69 और 1899–1900 के अकाल केवल प्राकृतिक आपदाएँ नहीं थे, बल्कि उन्होंने बीकानेर राज्य के पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था को पुनर्गठित किया।

इन अकालों ने यह स्पष्ट किया कि मरुस्थलीय क्षेत्रों में जल संरक्षण, वनस्पति संरक्षण और सामुदायिक संसाधन प्रबंधन जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

1868–69 तथा 1899–1900 के अकाल बीकानेर राज्य के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं। इन अकालों ने प्राकृतिक संसाधनों, वनस्पति, जल स्रोतों और जैव विविधता को प्रभावित किया तथा समाज को गहरे संकट में डाल दिया। जनसंख्या में कमी, पलायन, पशुधन की हानि और आर्थिक अवनति इनके प्रमुख परिणाम थे। साथ ही इन संकटों ने स्थानीय समाज को जल संरक्षण, सामुदायिक सहयोग और पर्यावरणीय अनुकूलन के नए उपाय विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इसलिए इन अकालों का अध्ययन केवल आपदा इतिहास नहीं, बल्कि पर्यावरणीय इतिहास और मानव अनुकूलन के अध्ययन का भी महत्वपूर्ण आधार है।

संदर्भ सूची

- James Tod, *Annals and Antiquities of Rajasthan*.
- K.S. Gupta, *History of Bikaner State*.
- G.N. Sharma, *Rajasthan Ka Itihas*.
- Rajasthan State Archives, Bikaner.
- Imperial Gazetteer of India.
- B.L. Bhadani, *Peasants, Artisans and Entrepreneurs*.
- David Hardiman, *Feeding the Baniya: Peasants and Usurers in Western India*.
- District Gazetteer: Bikaner.
- Reports on Rajputana Famines (1868–69 and 1899–1900).
- CAZRI, Jodhpur, Desert Ecology Studies.